P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* December- 2018

E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन

सारांश

शिक्षक विद्यार्थी का एक दोस्त, दार्शनिक एवं पथ प्रदर्शक होता है। वह छात्र को उपदेश नहीं देता अपितु वह उसे सीखने हेतु प्रेरित करता है। शिक्षक, शिक्षा के रूप में ज्ञान देता है इसलिए आने वाली पीढ़ियों में बदलाव के लिए एक समर्पित शिक्षक की आवश्यकता होती है, जो शिक्षण को पेशा ना मान उसे अपना महत्वपूर्ण कार्य समझे। शिक्षक की सही अभिवृत्ति एवं दृष्टिकोण छात्रों में सृजनात्मकता उत्पन्न करने में सहायक होती है। सृजनात्मक शिक्षण हेतु आवश्यक है कि शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया सहजता एवं सृजनात्मकता युक्त रखे। क्योंकि यह बालक में स्व प्रत्यय, बुद्धि लब्धि, स्मरण शक्ति, चिंतन शक्ति, तर्कशक्ति, अभिवृत्ति, अभिरुचि इत्यादि हेतु महत्वपूर्ण मानी जाती है इसी दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर अध्ययन किया गया है। शोध कार्य हेतु छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले से उच्चतर माध्यमिक शाला के कुल 251 शिक्षकों का चयन किया गया, जिनमें से 144 पुरुष एवं 107 महिला शिक्षक है। इन शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है और इस विधि में विषम संख्या वाले शिक्षकों को ही लिया गया है। शोध में लिए चरों की परस्पर संबंध के विषय में अध्ययन करने हेतु पीयर्सन सहसंबंध विधि द्वारा सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया गया। परिणाम यह प्रदर्षित करते हैं कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों दोनों ही समूहों में सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक धनात्मक सहसंबंध है।

नीरा पाण्डेय

प्राध्यापक,

शिक्षा शास्त्र विभाग,

श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,

जुनवानी

मुख्य शब्द : सृजनात्मक अधिगम, सृजनात्मकता, शिक्षकों की अभिवृत्ति।

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में समाज से जुड़े सभी घटक अपना–अपना सहयोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से देते रहते हैं। विशेषतया शिक्षा व्यवस्था में माता–पिता गुरुजनों तथा बालकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है, इसलिए समाज के प्रत्येक सदस्य के जीवन में शिक्षा का अटूट संबंध है। व्यक्ति की बौद्धिक विद्या का सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति शिक्षा द्वारा ही संभव है। शिक्षक को एक ओर विषय की ज्ञान की परिपूर्णता आवश्यक है वहीं दूसरी ओर शिक्षण विधियों की गुणवत्ता एवं कमियों का भी ज्ञान आवश्यक है, अन्यथा अधूरे शिक्षण विधि का ज्ञान बालक के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है। इतना ही नहीं शिक्षण पद्धति बालकों में अन्वेषण प्रवृत्ति का विकास करती है तथा उसे जिज्ञासु बनाए रखती है। शिक्षण विधि विद्यार्थियों के विभिन्न गुणों का विकास करने का एक स्तंभ भी है। आज के युग में मनोविज्ञान ने विद्यार्थियों में पाए जाने वाले अन्य प्रविधियों के ज्ञान के संदर्भ में काफी प्रकाश डाला है। इन प्रवृत्तियों में सृजनात्मकता स्व प्रत्यय बुद्धि लब्धि स्मरण शक्ति, चिंतन शक्ति तर्कशक्ति, अभिवृत्ति, अभिरुचि इत्यादि कुछ महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में इन शक्तियों की आवश्यकता विकास योगदान आदि पर अनगिनत शोध संपादित किए गए हैं। जिन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि इनके विकास से व्यक्तित्व का विकास सामाजिक दृष्टि से होता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व समाज के लिए लाभदायक है, अतः उपयुक्त शक्तियों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया जाने लगा है। उसी के आधार पर पाठ्यक्रम में विषयों तथा प्रकरणों का चयन शिक्षण विधियों की प्रासंगिकता आदि पर प्रारंभ से लेकर अंत तक परिवर्तन किया गया जहां पूर्व में छात्रों को प्रत्यक्ष एवं परंपरागत शिक्षण विधि से ज्ञान दिया जाता रहा है। वही आज प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष एवं स्वयं करके अनुभव द्वारा परिचर्चा द्वारा प्रयोग प्रदर्शन द्वारा ज्ञान

दिया जाने लगा है। डॉ बेगम उन शिक्षा शास्त्रियों में प्रथम है जो यह जोर देते हैं, की प्रतिभाओं को पहचानने के तुरंत बाद उन्हें उस तरह का सामाजिक वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए, जो उनको विकास एवं पहचान बनाने में सहायक होती है। शाला, समाज का लघु रूप है। इस कारण शाला का दायित्व और बढ़ जाता है। शर्मा 1969 ने अपने शोधों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि शाला का संगठित वातावरण बालक के विभिन्न शक्तियों के विकास में सहायक होता है। सुधाकर व रेड्डी (2017) अपने अध्ययन में यह पाया कि शिक्षण पेशे के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण नकारात्मक या सकारात्मक रूप से छात्रों की शैक्षिक सफलता और पाठों में प्रत्याशा को प्रभावित करता है। शिक्षण के प्रति शिक्षक का दृष्टिकोण, सीखने की दिशा में छात्रों के दृष्टिकोण को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। सृजनात्मक प्रतिभा की पहचान राष्ट्रीय जनशक्ति के अनिवार्य स्रोत के रूप में वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियां एवं खोज में वास्तविक तौर पर एक उभरता हुआ सवाल है। सृजनात्मकता को विज्ञान के अनुदान क्षेत्र के विस्तार का आधार माना है, अर्थात जितना सृजनात्मक अनुदान है, उतना अधिक उसका प्रभाव भी है। दूसरी ओर वस्तु या उत्पाद के आधार पर सृजनात्मकता की परिभाषा वैज्ञानिक एवं शिक्षा शास्त्री लगभग समान मानते हैं, परंतु सामान्य जन की सोच यह है कि अधिकांश व्यक्ति सृजनात्मक तौर पर शून्य होने के बाद भी ऊंचा सामाजिक स्तर पाते हैं। अनेक बार सृजनात्मकता के परीक्षणों से मिला कर समझा जाता है, परंतु सृजनात्मकता के परीक्षण के कुछ प्रमुख चरित्र हैं जोकि विकेंद्रित उत्पादकता परिवर्तन एवं मूल्यांकन है। दूसरी और बौद्धिक स्तर के परीक्षण में उपरोक्त चरित्रों के अलावा गिल्फोर्ड के बुद्धि की संरचना 1960 को दिया गया और केंद्रित उत्पादक समूह भी माना गया है। विकेंद्रित उत्पादकता एवं परिवर्तन सृजनात्मकता के तत्व के रूप में लिए जाने पर सृजनात्मक प्रक्रिया को निराकार एवं विषम बना देता है, जो कि सृजनात्मक विचार प्रक्रिया के मूल्यांकन को वस्तुनिष्ठ प्रति प्रतिक्रिया के आधार पर और जटिल बना देता है।

अध्ययन का उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

शोधकर्ता के शोध से सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए है उनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं–

काटोच (2017) द्वारा सेकेंडरी स्कूल टीचर्स एटिट्यूड टुवर्ड्स क्रियेटिव टीचिंग, विषय पर अध्ययन किया गया था। अध्ययन से यह प्रर्दशित होता है कि दृष्टिकोण व्यवहार निर्धारित करता है। रचनात्मक शिक्षण की दिशा में दृष्टिकोण शिक्षक के छात्रों और शिक्षण के तरीकों के प्रति व्यवहार को अभिव्यक्ति करता है। शिक्षक, जिनके पास रचनात्मक दृष्टिकोण है शिक्षण की दिशा में, युवाओं को शिक्षण, प्रोत्साहित करने या प्रोत्साहित करने के उनके तरीके अलग–अलग होने की संभावना है। बेथेटो और कौफमैन (2009) के अनुसार रचनात्मक शिक्षा की आवश्यकता है रचनात्मक शिक्षण। रचनात्मक शिक्षण सीखने वाले को विभिन्न कल्पना का उपयोग करने में मदद करता है। अनुसंधान के वर्णनात्मक तरीके के तहत इस पेपर में सर्वेक्षण विधि उपयोग किया गया था। वर्तमान षोध के लिए 94 स्कूल शिक्षकों का एक नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया था। विभिन्न समूहों के परीक्षण के बीच अंतर का महत्व जानने के लिए परीक्षण किया गया था। परिणाम संकेत दिया कि विद्यालय लिंग–वार और स्कूल के प्रबंधन के प्रकार, सभी स्कूल के शिक्षकों की रचनात्मक शिक्षण की दिशा में दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं है।

सुधाकर व रेड्डी (2017) अपने अध्ययन में यह पाया कि शिक्षण पेशे के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण नकारात्मक या सकारात्मक रूप से छात्रों की शैक्षिक सफलता और पाठों में प्रत्याशा को प्रभावित करता है। शिक्षण के प्रति शिक्षक का दृष्टिकोण, सीखने की दिशा में छात्रों के दृष्टिकोण को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अपने पेशे की ओर प्रेरित होते हैं और वे उत्साही रूप से स्कूल अकादमिक गतिविधियों में भाग लेते हैं।

केन नी ची एवं अन्य (2016) ने शिक्षण में रचनात्मक शिक्षक और उनकी रचनात्मकता के बीच संबंध विषय पर अध्ययन किया। इस शोध का मुख्य उद्देश्य मलेशियाई कक्षाओं में माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की रचनात्मकता के संबंधों को निर्धारित करना था। अध्ययन हेतु दो शोध उपकरणों में प्राप्त अंकों के आधार पर मापा गया,वे हैं 'खतेना – टोरेंस क्रिएटिव पर्सेशन इन्वेंटरी (केटीसीपीआई)' और 'क्रिएटिव टीचिंग इन्वेंटरी' (सीटीटी) हैं। 70 स्नातक शिक्षकों का नमूना पांच अर्ध शहरी माध्यमिक विद्यालयों से लिया गया था। पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच रचनात्मक शिक्षण प्रवृत्ति (सीटीटी) के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं, यह जांचने के लिए एक टी–टेस्ट किया गया था। डेटा का आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन का उपयोग करके विश्लेषण किया गया था। विभिन्न समूहों के माध्यमों की तुलना टी–टेस्ट द्वारा की गई थी। इस शोध में पाया गया कि इस शोध में पता चला कि शिक्षकों में रचनात्मकता की प्रवृत्ति और छात्रों को पढ़ाने में उनकी रचनात्मकता के बीच कोई संबंध नहीं है। इस प्रकार, कोई और कारण नहीं होगा जैसे कि केवल रचनात्मक शिक्षक रचनात्मक शिक्षण कर सकते हैं। इसके अलावा, निष्कर्षों से यह भी पता चला कि पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच उनकी रचनात्मक शिक्षण प्रवृत्तियों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उनके लिंग और अंतर्निहित रचनात्मकता के बावजूद विभिन्न विकास कार्यक्रमों के माध्यम से पुरुष और महिला शिक्षकों दोनों में रचनात्मक शिक्षण को बढ़ाया और मजबूत किया जा सकता है।

डेविस एवं अन्य (2014) ने 2005–2011 के बीच 210 शैक्षिक अनुसंधान, नीति और व्यावसायिक साहित्य की एक व्यवस्थित समीक्षा, जिसमें केवल 17 प्रकाशन शामिल हैं जो समावेशन मानदंडों को पूरा करते हैं और

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रचनात्मकता को बढ़ावा देने में शिक्षकों की भूमिका से संबंधित निष्कर्ष निकालते हैं, और 18 इस बारे में शिक्षक कैसे संवर्धित किया जा सकता है, से संबंधित निष्कर्ष निकालते हैं। साक्ष्य बताते हैं कि शिक्षक कौशल, दृष्टिकोण, भूमिका मॉडल के रूप में कार्य करने की इच्छा, शिक्षार्थियों की आवश्यकता के बारे में जागरूकता, लचीली पाठ संरचना, विशेष रूप से कक्षा के संपर्क की रचनात्मकता के लिए शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

क्राफ़्ट अन्ना एवं अन्य (2007) ने क्रिएटिव लर्निंगशिप्स (पीआईसीएल) (फरवरी 2005–जनवरी 2006) में प्रगति पर ध्यान केंद्रित करने वाले इंग्लैंड में चार साइटों में किए गए गुणात्मक स्कोपिंग अध्ययन से केंद्रित निष्कर्षों की रिपोर्ट की है, जो राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम, क्रिएटिव पार्टनरशिप द्वारा वित्त पोषित हैं। अध्ययन ने यह पता लगाया कि रचनात्मक शिक्षा में प्रगति को दो पाठ्यक्रम क्षेत्रों में कैसे वर्णित किया जा सकता है। पेपर विश्लेषणात्मक रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो अध्ययन कुछ प्रमुख निष्कर्षों को सारांशित करता है, जिसमें शिक्षक दृष्टिकोण पर विशेष ध्यान दिया जाता है, मूल शोध रिपोर्ट में किए गए विश्लेषण के इस टुकड़े को लेते हुए और विशेष शिक्षकों के दृष्टिकोण में चर्चा करते हुए रचनात्मक शिक्षा और रचनात्मक सीखने के लिए शिक्षण के संबंधों के विषय में अध्ययन किया।

परिकल्पना

परिकल्पना क्रमांक 1 के विस्तार से अध्ययन करने हेतु निम्न दो उप परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया गया है।

1. उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।
2. उच्चतर माध्यमिक शाला के महिला शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।
3. उच्चतर माध्यमिक शाला के पुरुष शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के चयन के लिए उच्चतर माध्यमिक शाला के कुल 251 शिक्षकों का चयन किया गया। जिनमें से 144 पुरुष एवं 107 महिला शिक्षक है। इन शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है और इस विधि में विषम संख्या वाले शिक्षकों को ही लिया गया है।

उपकरण

इस अध्ययन हेतु श्रीमती नीरा पांडे एवं डॉ. पी.के. श्रीवास्तव द्वारा सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण अभिवृत्ति का निर्माण किया गया। जिसकी विश्वसनीयता .978 प्राप्त हुई जो कि एक उच्च स्तर की है। उपकरण का विवरण – सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण के कथनों में सृजनात्मक अधिगम हेतु 4,5,6,8,10,12,14,15,17,18,19, 20,21,24,25,26,27,28,31,34,39,41,48,49 का चयन किया गया है तथा शिक्षण अभिवृत्ति के लिए 1,2,3,9,11,13,16, 22,23,29,30,32,33,35,36,37,38,40,42,43,44,45,46,47 एवं 50 का निर्माण किया गया। इस परीक्षण की सार्थकता एवं वैधता को बनाए रखने के लिए कुछ धनात्मक तथा गुणात्मक कथनों का चयन किया गया है। सृजनात्मक अधिगम में ऋणात्मक कथन1,2,3,4,7,9,10,11,13,14,16, 21, 22,23,25,27,30,32,33,34,35,37,38,40,42,45,46,47,48 है

तथा शेष धनात्मक है। इस प्रकार 29 ऋणात्मक कथन 21 धनात्मक कथन का चयन कर परीक्षण का निर्माण किया गया है। उपकरण का प्रशिक्षण के प्रत्येक पदों का संकलन किया गया धनात्मक उत्तर पूर्ण सहमति की स्थिति में 5 अंक तथा पूर्णता असहमति पर एक अंक प्रदान किए गए ऋणात्मक प्रश्नों में पूर्णता सहमति पर एक अंक तथा पूर्व सहमति पर 5 अंक प्रदान किए गए। एक शिक्षक द्वारा प्राप्त रचनात्मक अधिगम के अंकों का योग तथा अभिव्यक्ति के अंकों का योग शिक्षक का सृजनात्मक अधिगम और शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार प्रतिदर्श के एक शिक्षक को अधिकतम 125 अंक सृजनात्मक अधिगम में तथा 125 अंक शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर प्राप्त होते हैं।

ऑकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण

सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण अभिवृत्ति में सहसंबंध का अध्ययन करने के लिए दोनों समूहों– पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांको के मध्य सहसंबंध गुणांक की गणना की गई है। प्राप्त परिणामों को सारणी क्रमांक 1,2,3 में प्रस्तुत किया गया है।

उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांको के मध्य सहसंबंध

सारणी क्रमांक -1 शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांको के मध्य सहसंबंध

क्रं.	समूह	प्रतिदर्श संख्या	स्वतंत्रता के अंश	चर	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	सहसंबंध गुणांक
1.	उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षक	251	249	सृजनात्मक अधिगम	501	49.66	0.457*
				शिक्षण अभिवृत्ति	499.86	49.72	
2.	उच्चतर माध्यमिक शाला के महिला शिक्षक	107	105	सृजनात्मक अधिगम	493.73	49.70	0.466*
				शिक्षण अभिवृत्ति	496.31	53.83	
3.	उच्चतर माध्यमिक शाला के पुरुष शिक्षक	144	142	सृजनात्मक अधिगम	506.36	51.18	0.418*
				शिक्षण अभिवृत्ति	502.36	46.57	
*P< .01 सार्थक सहसंबंध							

निष्कर्ष

परिकल्पना के सत्यापन हेतु उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति का मापन किया गया तथा प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन निकाला गया जिसे सारणी में प्रमुख रूप से दर्शाया गया है। सारणी क्रमांक 1 से यह स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों का सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.457 है, जो कि .01 विश्वास स्तर पर दिये मान से अधिक है। प्रस्तावित परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के मध्य सहसंबंध गुणांक 0. 457 सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। परिकल्पना सत्यापित होती है।

सारणी क्रमांक 1 से यह भी स्पष्ट है कि एक सार्थक अधिगम उच्चतर माध्यमिक शाला के महिला शिक्षकों का सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.466 है, इसी प्रकार पुरुष शिक्षकों का सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य परिकल्पना के सत्यापन के लिए सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया गया जो 0.418 आया। सांख्यकीय सारणी से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि यह .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। इस निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि प्रस्तावित परिकल्पना क्रं. 1.1 उच्चतर माध्यमिक शाला के महिला शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। परिकल्पना सत्यापित होती है। इस निष्कर्ष से यह भी प्रमाणित होता है कि परिकल्पना क्रं. 1.2 उच्चतर माध्यमिक शाला के पुरुष शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। परिकल्पना सत्यापित होती है। शिक्षक, जिनके पास रचनात्मक दृष्टिकोण है शिक्षण की दिशा में, युवाओं को शिक्षण, प्रोत्साहित करने या प्रोत्साहित करने के उनके तरीके अलग–अलग होने की संभावना होती है (काटोच 2017)। पासी एवं मल्होत्रा (1994) ने क्रियात्मक कार्यक्रम के आधार पर इनकी प्रभावशीलता का अध्ययन किया इसका परिणाम उत्साहवर्धक था इससे शिक्षकों में सृजनात्मकता का विकास संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अहमद ए. एवं व्यास ए. (1987),विद्यालय एवं सृजनात्मकता, जनरल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी, 44(4),184*
2. *ची, केन नी, यहाया, नोराफ्फांदी, इब्राहिम, नॉर, नूर हसन, मोहम्मद(2016), कनेक्शन बिट्वीन क्रियेटिव टीचर एंड देयर क्रियेटिविटी इन टीचिंग, मलेशियन जर्नल ऑफ हायर ऑर्डर थिंकिंग स्किल्स इन एजुकेशन 3,* *https://www.researchgate.net/profile/Ken_Nee_Chee/publication/308802695*
3. *डेविस डी., जिंदल–स्नैप डी., डिगबी आर. होवे ए, कोलियर के.,हे पी.(2014),द रोल्स एन्ड डेवेलपमेंट नीड्स ऑफ टीचर्स टू प्रमोट क्रियेटिविटीः ए सिस्टमेटिक रिव्यू ऑफ लिटरेचर. टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन,41,34–41,* *https://doi.org/10.1016/j.tate.2014.03.003*
4. *काटोच सुमन कुमारी (2017). सेकेंडरी स्कूल टीचर्स आटिट्यूड टुवर्ड्स क्रियेटिव टीचिंग, स्कॉलर्ली रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीस,4(37),* *https://doi.org/10.21922/srjis.v4i37.10588*
5. *क्राफ़्ट अन्ना, करेमिन टेरेस, बर्नाड पेमेर्ल, कॅपेल केराइ,(2007), टीचर स्टॅन्स इन क्रियेटिव लर्निंगः ए स्टडी ऑफ प्रोग्रेशन,थिंकिंग स्किल्स एन्ड क्रियेटिविटी,2 (2),136–147,* *https://doi.org/10.1016/j.tsc.2007.09.003*
6. *पासी,बी. के. एवं मल्होत्रा एस. पी. (1994), पर्सनलसइज्ड टीचर प्रोग्राम ए फोनोलाजिकल स्टडी, प्रोग्रेसिव एजुकेशनल हेराल्ड*
7. *शर्मा(1969),विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता, जनरल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी, 44(4),182*
8. *सुधाकर के, रेड्डी दयाकारा वी, (2017), ए स्टडी ऑन एटिट्यूड ऑफ टीचर्स टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन, द इंटरनॅशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकॉलजी,4(3),98, 130–136*